मूल्यांकित अनुप्रिया B

Mentorship Programme

दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य
(Hindi Literature)

टेस्ट-8
(द्वितीय प्रश्न-पत्र)

DTVF / OPT-21 **M1-HL8**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time Allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक : 250 *Maximum Marks : 250*

नाम (Name): Divya Rajput

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.): [redacted]

ई-मेल पता (E-mail address): ______

परीक्षा केंद्र एवं दिनांक (Test Centre and Date): ______

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2021] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2021]:

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 149 1/2   टिप्पणी (Remarks): —

मूल्यांकनकर्ता (कोड तथा हस्ताक्षर) *Evaluator (Code & Signatures)* E-51	पुनरीक्षणकर्ता (कोड तथा हस्ताक्षर) *Reviewer (Code & Signatures)* R-11

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

उत्तर अच्छा है।
विषय-वस्तु पर पकड़ अच्छी है।
भूमिका व निष्कर्ष अच्छे हैं।
भाषा आधुनिक है।
उत्तरों का प्रस्तुतीकरण अच्छा है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - क

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: $10 \times 5 = 50$

(क) मित्र बनकर रहना स्त्री-पुरुष बनकर रहने से कहीं सुखकर है। तुम मुझसे प्रेम करते हो, मुझ पर विश्वास करते हो, और मुझे भरोसा है कि आज अवसर आ पड़े, तो तुम मेरी रक्षा प्राणों से करोगे। तुममें मैंने अपना पथ-प्रदर्शक ही नहीं, अपना रक्षक भी पाया है। मैं भी तुमसे प्रेम करती हूँ, तुम पर विश्वास करती हूँ और तुम्हारे लिए कोई ऐसा त्याग नहीं है, जो मैं न कर सकूँ। और परमात्मा से मेरी यही विनय है कि वह जीवनपर्यन्त मुझे इसी मार्ग पर दृढ़ रखें। हमारी पूर्णता के लिए, हमारी आत्मा के विकास के लिए और क्या चाहिए! अपनी छोटी-सी गृहस्थी, अपनी आत्माओं को छोटे-से पिंजड़े में बन्द करके, अपने दु:ख-सुख को अपने ही तक रखकर, क्या हम असीम के निकट पहुँच सकते हैं? वह तो हमारे मार्ग में बाधा ही डालेगा। कुछ विरले प्राणी ऐसे भी हैं, जो पैरों में यह बेड़ियाँ डालकर भी विकास के पथ पर चल रहे हैं।

संदर्भ एवं प्रसंग

प्रस्तुत गद्यावतरण हिन्दी उपन्यास सम्राट प्रेमचंद की सर्वोत्कृष्ट औपन्यासिक कृति 'गोदान' से उद्धृत है। ये पंक्तियाँ मिस मालती मिस्टर मेहता को कह रही है। उपन्यास के अंत की ये पंक्तियाँ प्रेमचंद को प्रेम दृष्टि का भी निरूपण करती है।

व्याख्या

मेहता द्वारा विवाह प्रस्ताव दिए जाने पर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

मालती कहती हैं कि मित्रता गार्हस्थ्य जीवन से बेहतर है और तुम्हारे और मेरे बीच जो प्रेम संबंध है ; वह ऐसे ही बना रहेगा। मुझे इससे अधिक आकांक्षा नहीं है। अपनी गृहस्थी बसाकर उसी में मग्न रहने से अच्छा है मानवता के कल्याण के लिए जीवन अर्पित करना। इस प्रकार मालती व्यक्तिगत सुख पर मानव सेवा को वरीयता दे रही है।

विशेष

- भाषा सरल, सहज व प्रवाहमयी है।
- छायावादी प्रेम-दृष्टि की झलक दिखती है।
- प्रतीक और उपमाओं का बेहतर प्रयोग है।
- शब्दावली में तत्सम व तद्भव शब्दों का मिश्रण है।
- मालती का व्यक्तित्वांतरण हुआ है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) जब समस्त हिन्दू जाति की एक वैदिक सम्प्रदाय न रही तो वही मसल चरितार्थ हुई कि "एक नारि जब दो से फँसी जैसे सत्तर वैसे अस्सी"। हमारी एक हिन्दू जाति के असंख्य टुकड़े होते-होते यहाँ तक खण्ड हुए कि अब तक नये-नये धर्म और मत-प्रवर्त्तक होते ही जाते हैं।

संदर्भ एवं प्रसंग

प्रस्तुत गद्य पंक्तियाँ हिन्दी नाटक इतिहास के पुरोधा भारतेंदु के प्रसिद्ध नाटक 'भारत-दुर्दशा' से ली गई हैं। इन पंक्तियों में भारतेंदु भारत की दुर्दशा के कारणों में धर्म की भी भूमिका बता रहे हैं।

व्याख्या

भारतेंदु का कहना है कि वैदिक सभ्यता से चली आती हिन्दू जाति को विभाजनकारी शक्तियों ने भिन्न-भिन्न मतों और संप्रदायों में विभक्त कर दिया, जिसके कारण लोगों की एकता कमज़ोर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

पड़ गई और यह भारत की दुर्दशा का कारण बन गया। यहाँ भारतेंदु का अभिप्राय हिंदू धर्म के अंदर से उभरने वाले बौद्ध, जैन, शैव, शाक्त, वैष्णव मतों से है, जिन्होंने हिंदू जाति को बाँट दिया।

विशेष

- 'भारत-दुर्दशा' में भारतेंदु ने भारत की दुर्दशा के बाह्य व आंतरिक दोनों कारणों की पड़ताल की है।
- मुहावरे व लोकोक्तियों द्वारा जन-जीवन से निकटता दृष्टिगोचर।
  ("एक नारि जब दो से - - - ......
- भाषा सहज व स्वाभाविक है।
- 'स्कंदगुप्त' में प्रसाद ने भी ऐसा मत व्यक्त किया है।

1½/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) कवित्व वर्णमय चित्र है, जो स्वर्गीय भावपूर्ण संगीत गाया करता है! अन्धकार का आलोक से, असत् का सत् से, जड़ का चेतन से, और बाह्य जगत् का अन्तर्जगत् से संबंध कौन कराती है? कविता ही न!

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उपर्युक्त गद्य पंक्तियाँ नाटक साहित्य के शिखर पुरुष जयशंकर प्रसाद के प्रसिद्ध नाटक 'स्कंदगुप्त' से ली गई हैं। ये पंक्तियाँ कवि मातृगुप्त ने कही हैं, जिसके माध्यम से वे जीवन में कविता का महत्व रेखांकित कर रहे हैं।

व्याख्या

मातृगुप्त का कहना है कि कविता एक भावपूर्ण चित्र है, जो संगीत की अनुभूति कराता है। कविता के आनंद को स्वर्ग के आनंद के समकक्ष बताया गया है। कविता की महत्ता बताते हुए वे कहते हैं कि कविता प्रकाश व

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुधा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

अंधकार, प्रकृति व मनुष्य तथा बाह्य व आंतरिक भावों के संबंध बनाती है।
कविता की महत्ता प्रत्येक पक्ष के लिए आवश्यक है।

विशेष

- कविता को गौरवपूर्ण पद प्रदान किया गया है।
- भाषा अपने तत्समी रूप के साथ प्रभाव में जानदार है।
- उपमा का प्रयोग है।
- खड़ी बोली की गहन भावों को अभिव्यक्त करने की क्षमता दर्शनीय है।

Good 6.5/10

प्रासंगिकता

भावनाओं को महत्व देना वर्तमान के तकनीकी युग में अति आवश्यक है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(घ) मैं खुद अपने आगे खड़ा हूँ, मान्यताओं की सलीब पर टँगा हुआ, लहूलुहान!.... पत्थर का एक बहुत बड़ा ढेर है और लोग आँखें मूँदकर पत्थर मारते हैं.... लोग फूल चढ़ा रहे हैं मान्यताओं पर..... आदमी को बार-बार की नोची-छिछड़ी को दाँतों से नोंच-नोंचकर फेंक रहे हैं.... लोग नंगी औरत के कोमल शरीर को खुरदरे जूट के रस्सों से जकड़कर बाँध रहे हैं..... सिर्फ एक लाचारी का आरोप..... आदमी नहीं, टूटा हुआ, पुराना खण्डहर.... आखिर क्यों?

संदर्भ एवं प्रसंग

प्रस्तुत गद्य पंक्तियाँ "राजेंद्र यादव" द्वारा संपादित 'एक दुनिया समानांतर' की एक प्रमुख कहानी (दुख और दवा) से ली गई हैं। ये पंक्तियाँ व्यक्ति के अंतर्द्वंद्व को प्रदर्शित कर रही हैं।

व्याख्या

लेखक सोचता है कि समाज व मान्यताएँ व्यक्ति को बैचेन कर रही हैं। यहाँ समाज व व्यक्ति के मध्य संघर्ष की स्थिति है। लेकिन लेखक

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पलायन करना चाहता है व व्यक्ति के जीवन को महत्व देना चाह रहा है।

विशेष

- प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग है।
- विराम चिह्नों का बेहतर प्रयोग है।
- भाषा रूपक के सहारे कथ्य को व्यक्त करना चाहती है।

ठीक है

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) अब वह यह मानने को तैयार है कि आदमी का दिल होता है, शरीर को चीर-फाड़कर जिसे हम नहीं पा सकते हैं। वह 'हार्ट' नहीं वह अगम अगोचर जैसी चीज है, जिसमें दर्द होता है, लेकिन जिसकी दवा 'ऐंड्रिलिन' नहीं। उस दर्द को मिटा दो, आदमी जानवर हो जाएगा। ... दिल वह मंदिर है जिसमें आदमी के अंदर का देवता बास करता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग

उपर्युक्त गद्यावतरण आंचलिक उपन्यासों के शिखर पुरुष फणीश्वर नाथ रेणु द्वारा रचित सर्वाधिक प्रसिद्ध औपन्यासिक कृति 'मैला आँचल' से लिया गया है। ये पंक्तियाँ डॉ. प्रशांत की मनःस्थितियों का वर्णन है।

व्याख्या

डॉ. प्रशांत का पहले मानना था कि व्यक्ति में दिल नाम की कोई चीज नहीं होती, वह न जाने किस अंग को दिल कहता है, लेकिन गाँव से जुड़कर उसको अहसास हुआ है कि व्यक्ति के अंदर भावनाओं की उपस्थिति होती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

व दिल के अंदर ही व्यक्ति की भावनाएँ रहती हैं। अगर दिल से भावनाएँ समाप्त हो जाए, तो व्यक्ति की अच्छाइयाँ खत्म होकर वह पशु-समान हो जाता है।

विशेष

- भाषा अपने कथ्य को प्रभावशाली रूप से अभिव्यक्त करने में समर्थ है।
- प्रतीक के माध्यम से भावनाओं को रूप दिया गया है।

प्रासंगिकता

वर्तमान के स्वार्थ-आधारित युग में ये पंक्तियाँ व्यक्ति की अनुभूतियों को महत्त्व देने हेतु प्रेरित करती हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2. (क) 'अपने उपन्यासों एवं कहानियों में प्रेमचंद की बुनियादी चिन्ताएँ अपने समय की भी हैं और भविष्य की भी हैं।' इस विचार से आप कहाँ तक सहमत हैं? तर्क सहित उत्तर दीजिये। 20

प्रेमचंद सामाजिक यथार्थवाद के लेखक हैं। इस दृष्टिकोण के अनुसार उनका समस्त रचना-संसार समाज की समस्याओं से टकराता नज़र आता है। वस्तुत: प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों व कहानियों में तत्कालीन जीवन को समग्रता में चित्रण करने के साथ ही अपनी अंतर्दृष्टि के आधार पर भविष्य की समस्याओं का भी निरूपण किया है।

प्रेमचंद के उपन्यास → अपने उपन्यासों के माध्यम से प्रेमचंद ने समाज की लगभग प्रत्येक समस्या को उठाया है

'निर्मला' में अनमेल विवाह की चिंता को

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'सेवासदन' में वेश्यावृत्ति की समस्या को, 'गबन' में अनियंत्रित इच्छाओं के दुष्परिणाम को बताया है तो 'रंगभूमि' में महाजनी सभ्यता के शोषण को तथा 'प्रेमाश्रम' व 'कर्मभूमि' में किसानों की समस्याओं को उभारा है। इस प्रक्रिया का चरम बिंदु उनका महाकाव्यात्मक उपन्यास 'गोदान' है, जिसमें उन्होंने संपूर्ण भारतीय समाज के यथार्थ को समग्रता से पकड़ना चाहा है।

'गोदान' में तत्कालीन समय की समस्याएँ तो दिखती ही हैं जैसे- सामंतवादी व्यवस्था में किसानों का निर्मम शोषण, अनमेल विवाह की समस्या, विधवा जीवन का दुख, दलित समस्या, दहेज

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

की समस्या व तमाम अन्य सभी समस्याएँ किसी-न-किसी चरित्र के माध्यम से दिखती हैं।

ध्यातव्य है कि इसमें अतीत की समस्याएँ भी नज़र आती हैं जैसे- सांप्रदायिकता की समस्या (झुमिया के पति की मौत), आने वाले समय में पूंजीवादी सभ्यता द्वारा मज़दूरों का शोषण (गोबर का शोषण); लोकतंत्र का धनतंत्र में बदलना व राज्य द्वारा गरीबों का शोषण (थानेदार के माध्यम से) आदि।

इसी प्रकार प्रेमचंद की कहानियाँ भी यही भूमिका निभाती हैं। 'अलग्योझा', 'दूध का दाम', 'शतरंज के खिलाड़ी', 'सद्गति', 'कफन', 'गुल्ली डंडा' आदि में अपने

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, लाजपत नगर मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

समय की चिंताएँ भी हैं और 'ईदगाह' 'बूढ़ी काकी' के माध्यम से भविष्य की चिंताएं भी हैं।

डॉ. रामविलास शर्मा ने कहा भी है-
"यदि 1915-36 के बीच का इतिहास नष्ट हो जाए, तो प्रेमचंद की रचनाओं के आधार पर उसे लिखा जा सकता है।"

इसका आशय है कि अपने समय को तो उन्होंने अत्यंत प्रामाणिक तरीके से व्यक्त किया है। इसी प्रकार एक समीक्षक ने कहा है-
"प्रेमचंद की रचनाएँ अपने युग को तो दर्शाती ही हैं, बल्कि आने वाले युग के लिए भी अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं।"

V. Good 12½/20

अतः प्रेमचंद इस मामले में अत्यंत सफल रहे हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'श्रद्धा-भक्ति' निबंध के आधार पर आचार्य रामचंद्र शुक्ल की निबंध-शैली की विशिष्टताओं का उद्घाटन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

आचार्य रामचंद्र शुक्ल निबंध-साहित्य के शिखर पुरुष रहे हैं। उन्होंने निबंध के संबंध में अपनी विशिष्ट मान्यताएँ स्थापित की हैं। और उनकी मान्यताओं पर उनके निबंध खरे उतरे हैं।

'श्रद्धा-भक्ति' आचार्य शुक्ल का अत्यंत प्रशंसित निबंध रहा है। शुक्ल जी की निबंध-शैली की विशिष्टताएँ इस प्रकार हैं:-

१. शुक्ल जी विचारात्मक निबंध लिखते हैं।
२. उनकी मान्यता है कि निबंध वह है जहाँ एक-एक पैरा में विचार दबा-दबाकर कसे गए हों। यह मान्यता 'श्रद्धा-भक्ति' में स्पष्टतः परिलक्षित होती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'श्रद्धा-भक्ति' विचार-प्रधान है, तथा मुख्यतः बुद्धि यात्रा के लिए निकली है; बीच-बीच में थकावट दूर करने के लिए हृदय आया है।

शुक्ल जी ने दूसरे निबंध में अपने विचारों की प्रस्तुति की है। बीच में कहीं-कहीं हास्य-व्यंग्य का बोध है।

उदाहरणतः

"जब कोई पक्का कलावंत गाना गाने के लिए अपना आठ अंगुल मुँह खोलता है और आ-आ करके विकल होता है, तो बड़े-बड़े लोगों का आसन डिग जाता है।"

शुक्ल जी की शैली की दूसरी विशिष्टता यह है कि उन्होंने सूत्र-भाषा का अत्यंत सधा हुआ प्रयोग किया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"प्रेम और श्रद्धा के योग का नाम भक्ति है।"

"प्रेम स्वप्न है, तो श्रद्धा जागरण।"

एक अन्य विशिष्टता है कि शुक्ल जी ने विचारों की संतुलित व संयमित प्रस्तुति की है।

समग्रतः शुक्ल जी ने अपने निबंधों में इतनी मौलिकता, सृजनशीलता व प्रयोगशीलता प्रदर्शित की है कि आज तक कोई निबंधकार उनके निबंधों की बराबरी नहीं कर सका है, तथा निबंधों के इतिहास को भी शुक्ल जी के आधार पर विभाजित किया गया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) क्या 'दिव्या' उपन्यास में यशपाल मार्क्सवादी विचारधारा को प्रक्षेपित करने में सफल हुए हैं? तार्किक उत्तर दीजिये। 15

कृपया इस स्थान से कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

यशपाल प्रगतिवादी रचनाकार हैं। अतः यह स्पष्ट है कि उनके साहित्य में प्रगतिवादी मूल्यों तथा मार्क्सवादी विचारधारा का प्रक्षेपण दिखाई दे। यशपाल ने अपने कुछ उपन्यासों जैसे दादा कॉमरेड, पार्टी कॉमरेड आदि में मार्क्सवादी विचारधारा का प्रत्यक्षतः प्रक्षेपण किया है।

लेकिन 'दिव्या' उपन्यास में मार्क्सवादी विचारधारा का प्रत्यक्षतः प्रक्षेपण संभव नहीं था, क्योंकि यह उपन्यास बौद्ध-काल से संबंधित कथानक पर आधारित है। अतः उस समय के कथानक में मार्क्सवादी मूल्यों की स्थूल प्रस्तुति संभव नहीं थी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

लेकिन यशपाल ने 'दिव्या' में मार्क्सवादी विचारधारा का सूक्ष्म प्रक्षेपण किया है।

मार्क्सवादी विचारधारा वंचित वर्गों के शोषण को उभारने पर केंद्रित है। 'दिव्या' में यशपाल ने वर्ण व्यवस्था के शोषण को दिखाया है तथा पृथुसेन के माध्यम से उसके प्रति आक्रोश भी दिखाया है।

"जन्म का अपराध! धन की शक्ति, विद्या की शक्ति, ज्ञान की शक्ति कोई भी जन्म को नहीं बदल सकती।"

इसी प्रकार मार्क्सवाद ने दासों की दयनीय स्थिति को उजागर किया है। प्रतूल की दासियों व दिव्या के दासी बनने पर उसकी कारुणिक दशा का मार्मिक वर्णन किया है।

मार्क्सवाद राज्य की व्यवस्था को शोषक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वर्ग द्वारा स्थापित मानता है। धर्मस्य देव शर्मा के माध्यम से कहलवाया है -

" इतने वर्षों पर्यन्त न्याय व्यवस्था के अंतर्गत रहते मैंने यही जाना है कि न्याय व्यवस्थापक के अधीन है।"

मारिश के माध्यम से उन्होंने मार्क्सवादी विचारधारा के अनुरूप पारलौकिक आस्थाओं का खंडन कर भौतिक जगत को सत्य माना है।

मारिश :- " भाग्य का अर्थ है विवशता तथा कर्मफल का अर्थ है पीड़ा के कारण का अज्ञान। इससे अधिक भाग्य व कर्मफल और कुछ नहीं।"

स्पष्टतः यशपाल 'दिव्या' में मार्क्सवादी विचारधारा को सूक्ष्म रूप से प्रक्षेपित करने में सफल रहे हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) मोहन राकेश चाहते थे कि 'आषाढ़ का एक दिन' के माध्यम से हिन्दी का एक मौलिक रंगमंच स्थापित करें। इस संबंध में उनकी दृष्टि स्पष्ट करते हुए बताएँ कि वे कहाँ तक सफल हो सके? 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मोहन राकेश की योजना हिन्दी का एक मौलिक रंगमंच स्थापित करने की रही है। उन्होंने 'आषाढ़ का एक दिन' की भूमिका में लिखा है - "हिंदी का रंगमंच पाश्चात्य रंगमंच से भिन्न होगा। यह हमारी रुचियों, संस्कृतियों का प्रतिनिधित्व करेगा।"

मौलिक रंगमंच से तात्पर्य

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - ख

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: $10 \times 5 = 50$

(क) हमारा सृष्टि-संहार-कारक भगवान् तमोगुणजी से जन्म है। चोर, उलूक और लंपटों के हम एकमात्र जीवन हैं। पर्वतों की गुहा, शोकितों के नेत्र, मूर्खों के मस्तिष्क और खलों के चित्त में हमारा निवास है। हृदय के और प्रत्यक्ष, चारों नेत्र हमारे प्रताप से बेकाम हो जाते हैं। हमारे दो स्वरूप हैं, एक आध्यात्मिक और एक आधिभौतिक जो लोक में अज्ञान और अंधेरे के नाम से प्रसिद्ध हैं।

संदर्भ एवं व्याख्या

प्रस्तुत गद्य पंक्तियाँ हिन्दी नाटक के आरंभिक व महान रत्न भारतेंदु द्वारा रचित 'भारत-दुर्दशा' से उद्धृत हैं। ये पंक्तियाँ अंधकार पात्र द्वारा कही गई हैं।

व्याख्या

अंधकार अपनी विशेषता बताते हुए कहता है कि सृष्टि का नाश करने वाले अंधकार से उसका जन्म है। अंधकार पर्वतों की गुफाओं में, मूर्खों की बुद्धि में तथा दुष्ट मनुष्य के हृदय में निवास

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

करता है। वह कहता है आध्यात्मिक जगत में उसे अज्ञान तथा भौतिक जगत में अंधेरे के नाम से जाना जाता है।

विशेष

- 'भारत-दुर्दशा' में भारतेंदु ने भारत की दुर्दशा के कारणों में अंधकार को भी स्थान दिया है।
- भाषा तत्सम होते हुए भी प्रभाव की दृष्टि से जानदार है।
- अंधकार को पात्र बनाकर उसकी विशेषताएं वर्णित करवाई गई हैं।

Good

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) एक चीज थी जिसे तुम नष्ट कर देना चाहते थे और वह नष्ट हुई, यह प्रमाणित करते हुए कि वह है। मैं जानती हूँ, कि वह है और दो बार तुम उस पर आक्रमण कर चुके हो और वह उन्हें बचा गया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ प्रस्तुत गद्यावतरण राजेंद्र यादव द्वारा संपादित पुस्तक 'एक दुनिया समानांतर' की एक प्रसिद्ध कहानी 'विजेता' से लिया गया है।

प्रसंग ये पंक्तियाँ पत्नी अपने पति से कह रही है। जब पति बच्चे को इस दुनिया में नहीं लाना चाहता और दो बार प्रयास करने के बावजूद सफल नहीं हुआ है, तो पत्नी द्वारा ये पंक्तियाँ कही गई हैं।

व्याख्या महिला कहती है कि तुम जिसे नष्ट करना चाहते थे, वह

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तुम्हारे प्रयासों से खुद का बचाव करने में सफल हुई है उसने अपने अस्तित्व का प्रमाण दिया है।

विशेष

- प्रतीकों के माध्यम से कथ्य की प्रस्तुति की गई है।
- भाषा सरल व सहज है।
- 'एक दुनिया समानांतर' की कहानियाँ अपने कथ्य को समाज के मध्य से उठाती हैं।
- अनुभूतियों की अभिव्यक्ति इस दौर की कहानियों की प्रमुख विशेषता रही है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) तुम मेरे सम्पूर्ण जीवन के प्रयत्नों को, अपने वंश के भविष्य को एक युवती के मोह में नष्ट कर देना चाहते हो! महापण्डित चाणक्य ने कहा है, "आत्मनं सततं रक्षेत दारैरपि धनैरपि।" पुत्र, स्त्री भोग्य है। मति-भ्रम होने पर मोह में पुरुष स्त्री के लिये बलिदान होने लगता है। वत्स, ऐसी ही परिस्थिति में नीतिज्ञ महत्त्वाकांक्षी और परलोककामी पुरुष के लिये नारी को पतन का द्वार कहते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग

प्रस्तुत गद्यावतरण प्रगतिवादी धारा के शिखर पुरुष 'यशपाल' द्वारा रचित उनकी प्रसिद्ध कृति 'दिव्या' से लिया गया है। इस प्रसंग में ये पंक्तियाँ प्रेस्थ द्वारा पृथुसेन को कही गई हैं।

व्याख्या

प्रेस्थ पृथुसेन को समझाते हुए कहते हैं कि वह दिव्या के मोह में पड़कर उनके जीवन के प्रयासों को व्यर्थ न करे। अपनी विचारधारा के पक्ष में वे चाणक्य जी का वाक्य दोहराते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तथा बताते हैं कि बड़े-बड़े विद्वान इसी कारण से नारी को पतन का मार्ग कहते हैं तथा जो व्यक्ति स्त्री के लिए अपना जीवन उत्सर्ग करने का सोचता है, वह भ्रमित है।

विशेष

१. नारी के प्रति सामंतवादी दृष्टिकोण है, जिसमें नारी को सिर्फ भोग की वस्तु माना गया है।

२. चाणक्य के माध्यम से भी नारी की उपेक्षा की गई है।

३. यशपाल नारी समस्या को समग्रता में उभारने के लिए सभी दृष्टिकोण प्रस्तुत करना चाहते थे। प्रेस्प के माध्यम से उन्होंने भोगवादी दृष्टि को प्रस्तुत किया है।

Good A 6½/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) कष्ट हृदय की कसौटी है, तपस्या अग्नि है। सम्राट! यदि इतना भी न कर सके तो क्या! सब क्षणिक सुखों का अंत है। जिसमें सुखों का अंत न हो, इसलिये सुख करना ही न चाहिये। मेरे जीवन के देवता! और उस जीवन के प्राप्य! क्षमा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग

प्रस्तुत गद्य पंक्तियाँ हिन्दी नाटकों के महान रचयिता जयशंकर प्रसाद के 'स्कंदगुप्त' नाटक से ली गई हैं।

ये पंक्तियाँ स्कंदगुप्त द्वारा प्रेम-प्रस्ताव दिए जाने पर देवसेना द्वारा कही गई हैं।

व्याख्या

देवसेना कहती है कि पीड़ा द्वारा ही हृदय ही परखा जा सकता है और यदि शासक होकर स्कंदगुप्त ऐसा नहीं कर सके तो यह उत्तम नहीं है। वह कहती है जीवन के सभी सुख क्षणिक होते हैं.

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

और सुखों की समाप्ति न हो, इसलिए सुख करना ही नहीं चाहिए वह स्कंदगुप्त को इस जीवन का देवता बताती है और उससे प्रस्ताव को दुहराने के लिए क्षमा माँगती है।

विशेष

- जयशंकर प्रसाद का 'प्रत्यभिज्ञा' या आनंदवाद दर्शन व्यक्त हुआ है, जिसके अनुसार सुखों को क्षणिक बताया गया है।
- देवसेना का चरित्र छायावादी-दृष्टि से प्रेरित है। जो मानवता की सेवा के लिए व्यक्तिगत हितों का त्याग करती है।
- ऐसी ही दृष्टि के साथ गौदान की मालती व रंगभूमि की सोफिया ने विवाह न करने का निर्णय लिया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) सुख और दुख अन्योन्याश्रय हैं। उनका अस्तित्व केवल विचार और अनुभूति के विश्वास में है। इच्छा ही सर्वावस्था में दुख का मूल है। एक इच्छा की पूर्ति दूसरी इच्छा को जन्म देती है। वास्तविक सुख इच्छा की पूर्ति में नहीं, इच्छा से निवृत्ति में है।

प्रस्तुत गद्यांश प्रगतिवादी उपन्यास धारा के प्रसिद्ध कवि यशपाल द्वारा रचित 'दिव्या' उपन्यास से लिया गया है।

ये पंक्तियाँ उपन्यास के अंतिम हिस्से की है जहाँ दिव्या द्वारा पूछने पर पृथुसेन द्वारा कही गई है।

प्रसंग कमजोर

व्याख्या

इसका आशय है कि सुख और दुख एक दूसरे पर आश्रित हैं। तथा उनकी अनुभूति हमारे विचार व भावनाओं पर आधारित है। दुख उत्पन्न होने का एकमात्र कारण इच्छा है। इच्छाओं की श्रृंखला निरंतर चलती रहती है तथा वास्तविक सुख इच्छाओं

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के पूरा होने से प्राप्त नहीं होता, बल्कि इच्छाओं से मुक्ति पाने से हासिल होता है। अतः व्यक्ति को जीवन में इच्छाओं को नियंत्रित करना चाहिए

विशेष

- इन पंक्तियों में यशपाल ने बौद्ध-धर्म का दर्शन प्रस्तुत किया है।
- भाषा कथ्य को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त करने में सक्षम है।
- सूत्र-शैली का प्रयोग है।
  (सुख और दुख अन्योन्याश्रय हैं)

5½
10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) मैला आँचल की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'मैला आँचल' आंचलिक उपन्यासों की परंपरा का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है। इस उपन्यास में रेणु ने आंचलिकता का सर्वश्रेष्ठ स्तर साधा है।

किसी भी आंचलिक उपन्यास की आंचलिकता मुख्यत: उसकी भाषा-शैली से ही प्रदर्शित होती है।

मैला आँचल की भाषा शैली

१. रचनाकार ने देशज भाषा का खुलकर प्रयोग किया है इसलिए देशज वातावरण के शब्द यहाँ प्राय: विद्यमान हैं।

उदाहरणत: गमगम, धमधम,

२. अंग्रेजी व तत्सम शब्दों के विकृत रूप मिलते हैं

जैसे पुलोगराम (programme), भैंस चरमन (vicechairman)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

८. भाषा-शैली में लोक-संस्कृति व लोकगीतों की मिठास व्यापक स्तर पर उपलब्ध है।

" याद जो आवे प्यारी तोहरी
सुरतिया से / शाले करेजवा में तीर जी।"

८. ध्वन्यात्मक सौंदर्य तथा नादात्मकता अपने पूरे प्रभाव के साथ विद्यमान है।

" धिन्ना धिन्ना धिन्ना निन्ना निन्ना
धिन तक धिन्ना ! धिन तक धिन्ना। "

८. व्यंग्य-शैली का प्रभावी उपयोग है।

" बुढ़ापे में तो आदमी की इंद्रियां शिथिल हो जाती हैं। यह दोष तो लछमी का है। एक ब्रह्मचारी का धरम भ्रष्ट करने का पाप उसके माथे है।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

८. मैला आँचल में रचनाकार ने चेतना-प्रवाह शैली का भी प्रयोग किया है

कमली के बारे में कथन है -

" डॉक्टर, तुम मुझे चिढ़ाने के लिए गाँव में क्यों आए। नहीं, नहीं। तुम नहीं आते तो मैं कमला नदी की बाढ़ में बह जाती - - - "

समग्रतः मैला आँचल की भाषा-शैली अपने प्रभाव में अत्यंत जानदार है तथा उपन्यास को सर्वश्रेष्ठ आंचलिक उपन्यास का दर्जा दिलाने में भाषा - शैली का पूर्ण योगदान है। लेकिन कहीं - कहीं कुछ सीमाएँ भी दिखती है :-

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जैसे:- क्षेत्र के बाहर के व्यक्तियों के लिए यह दुर्बोध है
१. लोक गीतों की मात्रा अत्यधिक है
२. कुछ शब्द बड़े कठिन हैं

लेकिन समग्रता में 'मैला-आँचल' की भाषा-शैली अपने कथ्य को प्रभावपूर्ण तरीके से अभिव्यक्त करने में सक्षम रही है तथा आंचलिक उपन्यासों के लिए आदर्श के रूप में विद्यमान है

Good 12/20

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'देवसेना' हिन्दी नाट्य परंपरा की अविस्मरणीय चरित्र है।' क्या आप इस कथन से सहमत हैं? सहमति या असहमति के कारण बताइए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'देवसेना' 'स्कंदगुप्त' नाटक की नायिका है। जो अपने त्याग, नैतिकता, प्रेम-भावना, समर्पण जैसे मूल्यों के कारण पाठक के मन पर अमिट छाप छोड़ती है। देवसेना के चरित्र की कुछ ऐसी विशेषताएँ हैं जो उसे हिन्दी नाट्य परंपरा में अविस्मरणीय चरित्र बना देती है।

१. भावनाओं की प्रधानता :- देवसेना का जीवन भावनाओं से निर्मित है तथा वह जीवन के प्रत्येक क्षण को आनंद व अनुभूतियों के आधार पर जीना चाहती है।

२. त्याग :- देवसेना त्याग की प्रतिमूर्ति है, वह

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, लाजकंप मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

समाज तथा देश-कल्याण में अपने व्यक्तिगत हितों की जरा भी परवाह नहीं करती तथा साम्राज्य के सारे संकट टल जाने पर भी स्कंदगुप्त का प्रस्ताव स्वीकार नहीं करती। वह कहती है -

"मालव का महत्त्व तो रहेगा ही, उसका उद्देश्य भी सफल होना चाहिए। आपको अकर्मण्य बनाने के लिए देवसेना जीवित नहीं रहेगी।"

२. समर्पण व प्रतिबद्धता :- देवसेना आरंभ से अंत तक स्कंदगुप्त के प्रति प्रतिबद्ध है तथा वह अपने प्रेम की उपलब्धि छल व कपट से नहीं, बल्कि पवित्रता के साथ चाहती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

समग्रतः देवसेना छायावादी नारी का प्रतीक है जो अहंकार-शून्य तथा सरल व प्रकृति से लगाव रखने वाली है।

देवसेना के इसी चरित्र व गुणों को देखते हुए एक प्रसिद्ध समीक्षक ने कहा है कि 'देवसेना' हिंदी नाट्य परंपरा की अविस्मरणीय चरित्र है।

हालाँकि दिनकर व मुक्तिबोध तथा नारीवादी दृष्टिकोण ने इस चरित्र को आदर्शवादी व मध्यकालीन बताया है लेकिन समग्रतः देवसेना प्रभावशाली व उदात्त चरित्र है।

Good A- 15

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'दिव्या' उपन्यास में इतिहास किस रूप में उपस्थित है? विवेचनात्मक उत्तर दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'दिव्या' उपन्यास इतिहास के बौद्ध-काल से संबंधित है। तथा कथानक के वातावरण में इतिहास की उपस्थिति दिखाई देती है।

यशपाल ने 'दिव्या' में इतिहास के तथ्य नहीं लिए हैं, बल्कि ऐतिहासिक आवरण लिया है तथा इसके माध्यम से वंचित तथा नारी वर्ग की समस्याओं को उठाया है।

'दिव्या' में इतिहास के रूप में तीन चरित्रों का जिक्र है - पुष्यमित्र, मिलिंद, पतंजलि। तथा तीन ऐतिहासिक स्थानों का जिक्र है - साकल, मथुरा आदि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

लेकिन ये ऐतिहासिक तथ्य मात्र वर्णित हैं। उपन्यास के प्राक्कथन में यशपाल ने कहा भी है-

"दिव्या इतिहास नहीं, ऐतिहासिक कथा-मात्र है। लेखक ने कला के अनुराग से काल्पनिक चित्र में ऐतिहासिक वातावरण के आधार पर यथार्थ का रंग देने का प्रयत्न किया है।"

इस दृष्टि से स्पष्ट है कि दिव्या मुख्यतः कल्पना है। और यशपाल की ऐतिहासिक दृष्टि भी स्पष्ट है-

"इतिहास विश्वास की नहीं, विश्लेषण की वस्तु है। इतिहास व्यक्ति का अपनी परंपरा में आत्म विश्लेषण है।"

यहाँ पुष्यमित्र व मिलिंद तथा पतंजलि को सिर्फ सांकेतिक रूप में प्रस्तुत किया गया है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सांगल और मथुरा का भी इतिहास में ऐसा वर्णन मिलता है - कला की दृष्टि से उत्कृष्टता केंद्र, व्यापार-स्थल आदि।

बौद्ध धर्म की मान्यताएँ भी प्रदर्शित की गई है। तथा बौद्ध धर्म की नारी के प्रति यथास्थितिवादी दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया गया है।

समग्रतः लेखक ने 'दिव्या' में इतिहास का उपयोगितावादी नज़रिये से प्रयोग किया है।

Good A
9½
15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) दिव्या उपन्यास में 'दिव्या' के चरित्र पर प्रकाश डालिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'दिव्या' उपन्यास का केंद्रीय चरित्र दिव्या है, जो इस उपन्यास की नायिका है। दिव्या का चरित्र स्थिर न होकर गतिशील और परिवर्तनशील है। आरंभ की दिव्या और अंत की दिव्या के चरित्र में महत्वपूर्ण अंतर है।

आरंभ की दिव्या एक कोमल, भावुक तरुणी है जो उच्च वर्ग की है तथा जिसके लिए जीवन का अर्थ संगीत, नृत्य व भावनाएँ हैं।

उसने जीवन की समस्याओं को नहीं देखा है। लेकिन अंत की दिव्या एक समझदार व अनुभवी दिव्या है, जिसने न सिर्फ जीवन की कठिनाइयों

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

को देखा है, बल्कि उन्हें अपने ऊपर झेला भी है।

दिव्या एक उच्च-कुल की कन्या से दासी बनती है तथा फिर वेश्या बनने का निश्चय करती है। उसके बाद रत्नप्रभा के साथ रहकर नर्तकी बनती है और अंत में मारिश को चुनती है।

अंत में दिव्या का चरित्र इतना प्रभावशाली है कि वह नारी के स्वत्व की कीमत पहचान गई है तथा रुद्रधीर के विवाह प्रस्ताव को ठुकराकर मारिश को चुनती है, जिसके पास न राजप्रासाद का सुख है, न निर्वाण का मिथ्या सुख, लेकिन जीवन के सुख-दुख को मिलकर पार करने वाला साहचर्य है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दिव्या कहती है :-

" कुलवधू का आदर, कुलमाता का सम्मान व कुलमहादेवी का अधिकार आर्य पुरुष के प्रणय मात्र हैं। यह नारी का सम्मान नहीं, उसे भोगने वाले पुरुष का सम्मान है।"

इसी प्रकार शुरुआत में एक बिंदु पर वह महसूस भी करती है कि नारी भोगने के लिए ही बनी है :-

" जो भोगे जाने के लिए ही बनी है; उसे अन्यत्र शरण कहाँ? नारी के लिए सब समान हैं। उसे सब भोगेंगे ही!"

लेकिन मारिश के कथनों से प्रभावित होकर दिव्या जीवन में आसक्ति लेती है तथा कहती है :-

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

"नारी की प्रकृति सृष्टि है।"

समग्रतः दिव्या का चरित्र एक प्रभावशाली चरित्र है। जो नारी की समस्याओं का प्रतिनिधित्व करता है लेकिन दिव्या नियति से हार नहीं मानती। इस दृष्टिकोण से वह भगवती चरण वर्मा की 'चित्रलेखा' व जैनेंद्र की 'मृणाल' से एक कदम आगे बढ़ जाती है तथा संघर्षों से हार न मानकर अपनी नयी दिशा तलाशती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'अलग्योझा' कहानी के कथ्य का विश्लेषण कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'अलग्योझा' कहानी प्रेमचंद की अत्यंत प्रसिद्ध कहानी है जिसमें उन्होंने संयुक्त परिवार की स्थितियों, समस्याओं व उसके महत्व को रेखांकित किया है।

इस कहानी के माध्यम से प्रेमचंद यह दिखाना चाहते हैं कि ग्रामीण समाज में 'संयुक्त परिवार ही विपत्तियों में एकमात्र सहारा होता है।

इस कहानी का कथ्य यह है कि रग्घू जी-तोड़ मेहनत करके अपने परिवार को पालता है तथा जिम्मेदारियाँ आने पर अपनी सौतेली माँ के साथ-साथ पूरे परिवार का दायित्व लेता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

यह कहानी ग्रामीण समाज के परिवार की आंतरिक संबंधों व स्थितियों को प्रदर्शित करने का भी माध्यम है।

रग्घू के बाद उसका बेटा भी परिवार के दायित्वों की पूर्ति के लिए विवाह न करने का निर्णय लेता है।

समग्रतः प्रेमचंद इस कहानी के माध्यम से अपने मूल्यों को प्रख्यापित कर रहे हैं जिसमें संयुक्त परिवार में उनकी आस्था तथा पारिवारिक संबंधों में अपनेपन व दायित्वबोध का होना शामिल है

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अल्ग्योझा निश्चित तौर पर भारत के ग्रामीण जीवन को तथा हर परिवार का प्रतिनिधित्व करता है तथा यह कहानी प्रेमचंद के आदर्शवाद से प्रेरित है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) उपन्यास-कला की दृष्टि से 'महाभोज' उपन्यास का अवलोकन कीजिये।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'महाभोज' 1979 ई० में रचित मन्नू भंडारी का अत्यंत चर्चित व प्रशंसित उपन्यास है यह उपन्यास राजनीतिक जीवन का प्रतिनिधि उपन्यास भी कहा जाता रहा है।

उपन्यास कला की दृष्टि से 'महाभोज' अवश्य ही बेहतरीन उपन्यास है। उपन्यास का कथानक वास्तविक जीवन की समस्याओं का प्रतिनिधित्व करता है तथा राजनीति की तमाम विद्रूपताओं व विसंगतियों को उद्घाटित करता है।

चरित्र-चित्रण की दृष्टि से भी उपन्यास बेहतर है। दा साहब का चरित्र उभारना हो या बौद्धिक वर्ग की असंगतता, लेखिका ने

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रभावशाली प्रस्तुति दी है।

१. चरित्र स्वाभाविक है। वे सिर्फ अच्छे या बुरे नहीं हैं, बल्कि अच्छे और बुरे का मिश्रण हैं।

१. चरित्रों के मध्य अंतर्द्वंद्व भी दिखाया गया है जैसे सक्सेना के मन में है-

" आज तक बाहरी दबाव व भीतरी उबाल के बीच वे घुटने टेकते ही आए हैं। लेकिन अब और नहीं। "

१. भाषा-शैली - लेखिका की भाषा शानदार है।

- पात्रों के अनुकूल भाषा का चयन
- जब से हरिजन टोला मा आगजनी भई ना सरकार, तब से ऊ काहू से लड़बौ नहीं करा। → हीरा
- दिज इज ए क्लियर कैस ऑफ सुसाइड' → दासाहब
- भाषा में कसाव विद्यमान

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

- सूत्र-भाषा का प्रयोग
  - "सोए हुए और मरे हुए आदमी में अंतर ही कितना है। बस एक सांस की डोरी।"
  - "कुर्सी और इंसानियत में बैर है।"

कथा-योजना :- अनावश्यक गति व विराम नहीं है वातावरण भी उपन्यास-योजना के अनुकूल है।

समग्रत: 'महाभोज' अपने प्रभाव में भी उत्कर्षकारी है जो सक्सेना का व्यक्तित्वांतरण से प्रदर्शित है। अत: 'महाभोज' उपन्यास कला की दृष्टि से हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ उपन्यासों में से है।

Good A

9/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation